विषयानुक्रमणिका

जीवाजीवाधिकार	पृष्ठ
मगलाचरण एव प्रतिज्ञा	१
समय का स्पष्टीकरण	२
स्व-पर समय की वास्तविकता	२
ससारी जीवो की दशा	२
ग्रथकर्त्ता का सकल्प	३
शुद्धनय से आत्म स्वभाव प्रदर्शन	३
यहाँ आत्मा को शुद्ध किस दृष्टि से कहा गया ?	३
शुद्धनय का प्रयोजन	४
व्यवहार एव शुद्धनय मे दृष्टिभेद	४
व्यवहारनय की उपयोगिता	४
व्यवहार द्वारा निश्चय मे प्रवेश	५
निश्चय एव व्यवहार की स्थिति	५
निश्चयनय के भेद	६
व्यवहारनय के भेद	६
उपचरित नय का स्वरूप	६
उपचरित नय की स्थिति	७
नय ज्ञान की आवश्यकता	७
व्यवहार नय की पात्रता	७
निश्चयनय के आश्रय की पात्रता	८
सापेक्ष नय ही सम्यक्ज्ञान के प्रतीक है	८
निश्चय व्यवहार मे दृष्टिभेद	९
तत्व व्यवहार द्वारा सम्यक्त्व संप्राप्ति.	९
शुद्धनय का स्वरूप	९
दृष्टात द्वारा इसीका स्पष्टीकरण	१०
जिन शासन का ज्ञाता कौन ?	१०
निश्चयनय की विशेषता	१०
परमात्मा कौन बनता है ?	११
व्यवहार एव निश्चय मोक्षमार्ग मे नाममात्र कथन भेद.	११
व्यवहार मोक्षमार्ग का दृष्टात	१२
दार्ष्टान्ति	१२
जीव की अज्ञान (अप्रतिबुद्ध) दशा.	१२
अप्रतिबुद्ध दशा का स्पष्टीकरण	१३
अतरात्मा की शुद्धात्म दृष्टि	१३
अप्रतिबुद्ध दशा की भर्त्सना	१४
तर्कपूर्ण आत्म सबोधन	१४
एक महत्वपूर्ण प्रश्न	१५
प्रश्न का समाधान	१५
व्यवहार स्तवन के कारण	१५
देहाश्रित जिन स्तवन क्यो ?	१६
निश्चय जिन स्तवन	१७
निश्चय जिन स्तवन का स्पष्टीकरण	१७
निश्चय जिन स्तवन का प्रथम रूप	१७
निश्चय जिन स्तवन का द्वितीय रूप	१८
निश्चय जिन स्तवन का तृतीय रूप.	१८
निश्चय प्रत्याख्यान (त्याग)	१८

निश्चय प्रत्याख्यान का दृष्टांत १६
ज्ञानी की मोहज भाव मे निर्ममता १६
अपना और पराया (ज्ञानी का आत्म-चिंतन) १६
स्वरूप चिंतन से आत्म लाभ २०
परात्मवादियो की आत्म-विभ्रातिया २०
परात्मवाद (जडवाद) केवल भ्रम है २१
उल्लिखित भ्रमो का निराकरण २२
व्यवहार से रागादिभाव जीव के ही है २२
उक्त कथन का समर्थन २३
रागादि जीव के स्वभाव नही २३
व्यवहारनय मिथ्या नही २३
नयो की विरुद्ध दृष्टियो का समन्वय. २४
निश्चयैकात से हानियाँ २५
किसका कौनसा नय आश्रयणीय है ? २६
निश्चय निरपेक्ष व्यवहार-व्यवहाराभास है. २७
प्रसंगोपात्त हेयोपादेय विवेचन २७
हेयोपादेय का निर्णय २७
व्यवहारनय किसे हेय व किसे उपादेय है ? २६
व्यवहार निश्चय का दृष्टात २६
शुद्धनय से आत्म तत्व का निरूपण ३०
आत्मा क्या नही है ? ३०
विकारीभाव आत्मा के होकर भी स्वभाव नहीं. ३१
वर्ग वर्गणा आदि भी आत्मा नहीं ३१
योग, बध, उदय मार्गणा भी आत्मा नही. ३२
गुणस्थान भी आत्मा के स्वभाव नही. ३२
शका-समाधान ३३
वर्णादिक जीव के क्यो नही है ? ३३
दृष्टात ३४
व्यवहार से जीव मूर्तिक है ३४
व्यवहार से सयोगज भाव जीव के है ३४
व्यवहार-निश्चय प्रवृत्ति के कारण ३५
जीव और पुद्गल मिल क्यो है ? ३५
ससारी वस्तुत मूर्तिक नही ३५
ससारी को रूपी मानने मे हानियाँ ३६
जीवस्थान निश्चय से जीव नही. ३६
जीव स्थान जड स्वभाव है ३६
'सूक्ष्म-बादर' जीवसज्ञा व्यवहार है ३७
वास्तविकता क्या है ? ३७

कर्त्ता-कर्म अधिकार

आत्मा मे क्रोधादि भाव क्यों होते है ? ३८
क्रोधादि भावो का परिणाम क्या होता है ? ३८
बध से निवृत्ति कब होती है ? ३६
भेदविज्ञान से बध की निवृत्ति ३६
भेदज्ञानी की भावना से आस्रव का अभाव ३६
ज्ञानी के आस्रव सबधी विचार ४०
वास्तविक ज्ञानी कोन ? ४१

ज्ञानी पर को जानता है; किंतु कर्त्ता नही. ४१
ज्ञानी रागादि को जानकर भी रागी नही बनता. ४१
ज्ञानी कर्मफलो का भी कर्त्ता नही. ४२
पुद्गल कर्म भी जीव के भावो का कर्त्ता नही. ४२
जीव-कर्म मे निमित्त-नैमित्तिक सबध. ४२
निश्चय से जीव-पुद्गल मे कर्त्ता-कर्म सबध नही. ४३
जीव निश्चय मे अपने भावो का कर्त्ता है. ४३
उसके विकारी भावो मे कर्मोदय निमित्त है. ४३
उक्त कथन का दृष्टात ४४
जीव कर्मों का कर्त्ता-भोक्ता व्यवहार से है ४४
जीव कर्मों का कर्त्ता क्यो नही है? ४४
द्विक्रियावादी मिथ्या दृष्टि है ४५
निश्चय से कर्त्ता, कर्म, क्रिया का स्वरूप ४५
मिथ्यात्वादि जीव के है या पुद्गल के ? ४६
मिथ्यात्वादि भाव जीव के हैं– और मिथ्यात्व कर्म प्रकृति पौद्गलिक हैं ४६
इसका दृष्टात ४६
मिथ्यात्वादि जीव और पुद्गल दोनो मे उत्पन्न होते हैं. ४७
प्रश्नोत्तर ४७
आत्मा किन विकार भावों का कर्त्ता है ? ४७
आत्मा के विकारभावो का परिणाम ४८
जीव अज्ञान से ही कर्मों का कर्त्ता है. ४८
सम्यक्दृष्टि जीव कर्मों का कर्त्ता नही. ४८
अज्ञान से कर्मोत्पत्ति किस प्रकार है ? ४९
अज्ञानभाव ही कर्मकर्त्ता सिद्ध होता है. ४९
अज्ञानभाव का परिणाम ४९
अज्ञानमूलक कर्तृत्व भाव कब नष्ट होता है ? ५०
शका-समाधान ५०
जीव पर द्रव्य का कर्त्ता उपचार से है ५०
वस्तुत पर कर्तृत्व मानने मे हानि ५१
जीव वस्तुत. अपनी योग और उपयोग शक्तियो का कर्त्ता है ५१
ज्ञानी कर्मों को पौद्गलिक ही जानता है ५१
अज्ञानी भी परद्रव्य या भाव का कर्त्ता न होकर अपने विकार भावो का ही कर्त्ता है. ५२
पर द्रव्य या भाव का कर्तृत्व निषिद्ध है. ५२
निष्कर्ष ५२

शंका समाधान ५३
दृष्टांत द्वारा समाधान का समर्थन ५३
जीव कर्मों का कर्त्ता उपचार से ही है. ५३
दृष्टांत ५४
बंध के कारण और भेद ५४
बंध के चार कारणो के तेरह भेद ५४
निश्चय से जीव-स्वभाव का ही कर्त्ता है. ५५
उक्त कथन का समर्थन ५५
व्यवहारनय से जीव कर्मों का कर्त्ता है. ५७
व्यवहार निरपेक्ष निश्चयैकांत सांख्य-सदाशिवो का मत है. ५८
निश्चयैकांत प्रमाण बाधित है ५८
जीव-पुद्गलो मे वैभाविक शक्ति का निरूपण ५९
निरपेक्ष मान्यताओ का निराकरण ५९
जीवो की परणतियाँ और उनके परिणाम. ६२
अज्ञानभाव का स्वरूप एवं ६३
असयम व कषाय का परिणाम ६४
योग की विशेषता ६४
अज्ञानमयी भावो का परिणाम ६४
बंध कब होता है और कब नही ? ६५
आत्मा के रागादि भाव पुद्गल कर्मों से भिन्न है ६६
पुद्गल के परिणाम जीव से भिन्न है ६७
निष्कर्ष ६७
शंकासमाधान-जीव कर्मबद्ध है या अबद्ध ? ६७
कर्मबद्धता और अबद्धता—दो दृष्टियाँ है. ६८
समयसार नय पक्षो से भिन्न है ६८
समयसार पक्षातिक्रांत है ६८

पुण्यपापाधिकार

कर्म परिचय ७०
बंधक दृष्टि से कर्मों मे समानता ७०
संबोधन ७०
दृष्टांत द्वारा पुण्य-पाप का निषेध ७१
मुक्ति के लिये स्वानुभूति का महत्व. ७२
स्वानुभूतिशून्य पुण्य मुक्ति मे सहायक नही. ७२
वास्तविक मुक्ति मार्ग क्या है ? ७३
बाह्यवृत्तियो मे उलझने से मुक्ति नही. ७३
गुणो मे विकार का कारण ७४
कर्मोदय से विकार होता है, विनाश नही ७४
किमाश्चर्यमत परम् ? ७५
आत्म विकार ही गुणो का घात है. ७५
मिथ्यात्व द्वारा सम्यक्त्व की हानि. ७५
अज्ञान से ज्ञानभाव का पराभव ७६
कषाय से वीतरागता की हानि ७६
बंधन-मुक्ति का उपाय ७६

विषय कषायी जीव मुक्त नही हो सकता ७७
क्रियानय निरपेक्ष ज्ञाननय एव ज्ञान निरपेक्ष क्रियानय से मुक्ति नही. ७७
मुक्ति को कौन प्राप्त करता है ? ७७

आस्रवाधिकार

आस्रव का स्वरूप ७८
वीतराग के आस्रव बध का अभाव ७८
आस्रव का उदाहरण ७९
उदय मे आचुकने पर कर्म की दशा. ७९
सत्ता मे कर्म आस्रव का कारण नही ७९
ज्ञानी निरास्रव क्यो और कब होता है ? ८०
शका-समाधान ८०
एक ज्ञातव्य रहस्य ८१
वास्तव मे रागद्वेष ही बंधकारण है ८१
बद्ध कर्म उदय मे कब आते है ? ८२
ज्ञानी के निरास्रव रहने का कारण ८२
यहाँ ज्ञानी से तात्पर्य वीतरागी सतो से है, कोरे शास्त्रज्ञानी से नही. ८४

संवराधिकार

सवर का लक्षण, कारण एव भेद विज्ञान निदर्शन. ८५
आत्मा के उपयोग की कर्मों से भिन्नता. ८५
भेद विज्ञान से सवर की उपलब्धि ८५
उदाहरण ८६
जीव की प्रतिबुध्द अप्रतिबुध्द दशा. ८६
परमात्मा कौन बनता है ? ८६
संवर कब और किस प्रकार होता है ? ८७
सवर का क्रम ८८
सवर से लाभ ८८

निर्जराधिकार

सम्यक्दृष्टि के भावो की महिमा ८९
भाव निर्जरा द्रव्य निर्जरा मे कारण है. ८९
दृष्टात से ज्ञान सामर्थ्य प्रदर्शन ९०
ज्ञानी का स्व-पर मे सामान्य प्रतिभास. ९१
ज्ञानी का स्व-पर मे विशेष प्रतिभास. ९१
भेद विज्ञान का माहात्म्य ९२
माही की आत्म वचना ९२
अणुमात्र रागी भी सम्यक्दृष्टि नही ९२
उक्त कथन का युक्ति पुरस्सर समर्थन. ९३
शंका-समाधान ९३
संबोधन ९३
ज्ञान के भेद व्यवहार से है, निश्चय से नही. ९४

ज्ञानाश्रय लेने मे अनेक लाभ ९४
एक भ्राति एव उसका निराकरण ९५
जीव स्याद्वाद द्वारा शुद्ध व अशुद्ध सिद्ध है. ९५
भव्यजीव संबोधन ९५
ज्ञानी की परिग्रह मे परत्व भावना ९७
कर्मफलो मे ज्ञानी रागद्वेष नही करता १००
ज्ञानी के नवीन कर्मबध न होने का कारण. १००
अज्ञानी के कर्मबध होने का कारण १०१
ज्ञान अन्य के द्वारा अज्ञान रूप नही परिणमता. १०१
प्राणी स्वय ही प्रज्ञापराधवश अज्ञानरूप परिणमता है. १०१
वस्तु के परिणमन मे निमित्त-उपादान का स्पष्टीकरण. १०२
उपादान निमित्त का विवेचन १०२
अज्ञानी सुख हेतु कर्मकर्त्ता और भोक्ता है. १०३
ज्ञानी विषयसुख हेतु कर्म नही कर्त्ता अत कर्म भी उसे फल नही देते. १०४
सम्यक्दृष्टि की निःशकता १०४
इसकी निःशकता निर्जरा का कारण १०४
निष्कांक्षिता और उसका फल १०५
सम्यक्दृष्टि की निर्विचिकित्सिता १०५
,, का अमूढ दृष्टित्व १०६
,, उपगूहनत्व १०६
सम्यक्दृष्टि की स्थितिकरणत्व १०७
,, वत्सलत्व १०७
,, प्रभावना १०७

बन्धाधिकार

बध का स्वरूप १०८
बध का कारण और दृष्टात १०८
बध हेतु का स्पष्टीकरण १०९
बध हेतु के अभाव मे उसका अभाव. १०९
सम्यक्दृष्टि को बध क्यो नही होता. ११०
सम्यक्-मिथ्या दृष्टि की श्रद्धा मे अतर. ११०
हिंसादि अपने भावो पर निर्भर है ११३
एक प्रश्न
प्रश्न का समाधान ११४
अध्यवसान सम्पूर्ण अनर्थों की जड है ११५
अध्यवसान स्वार्थ क्रियाकारी नही ११५
अध्यवसानो की भर्त्सना ११५
अध्यवसानो के अभाव मे बध का अभाव. ११६
अध्यवसान का स्वरूप ११६
अध्यवसान व्यवहारनय का विषय होने से निश्चय द्वारा वह प्रतिषिद्ध है. ११७
सम्यक्त्व शून्य को केवल चारित्र से मुक्ति नहीं. ११७
अभव्य के मुक्त न होने का कारण ११८

अभव्य की धार्मिक श्रद्धा ११८
व्यवहार धर्म का स्वरूप ११८
निश्चय धर्म का स्वरूप ११९
निश्चय में व्यवहार स्वय विलीन हो जाता है ११९
रागादि रूप परिणाम पर निमित्तक है ११९
ज्ञानी बुद्धिपूर्वक रागादि नही करता १२०
अज्ञानी को बध क्यो होता है ? १२०
कर्म बध अन्य किन कारणो से होता है ? १२०
द्रव्य और भाव प्रत्याख्यानादि में निमित्त नैमित्तिक सबध है । १२१
अध: कर्मादि दोषो का ज्ञानी अकर्त्ता है । १२२
अध कर्म एव उद्देशिक आहार का स्वरूप १२२
ज्ञानी साधु को आहारादि क्रिया मे बध क्यो नही होता ? १२३
इस सबध मे भ्रम और उसका निराकरण १२४

मोक्षाधिकार

दृष्टात द्वारा बधका स्पष्टीकरण १२५
ज्ञान मात्र से मुक्ति नही मिलती १२५
बध की चिंता व ज्ञान से भी मुक्ति नही १२६
बधनो का काटना ही बधन मुक्ति का उपाय १२६
बधन से मुक्ति कब सभव है ? १२६
बध हेय एव आत्म स्वभाव उपादेय है १२७
प्रश्नोत्तर (शुद्धात्म स्वरूप का ग्रहण कैसे हो ?) १२७
मैं कौन और कैसा हूं ? १२७
स्वरूप की अज्ञता ही बंधन का मूल है १२८
अपराधी बँधता-निरपराध मुक्त होता है । १२९
अपराध का स्वरूप और नामांतर १२९
निर्विकल्प दशा की अपेक्षा प्रतिक्रमण का विकल्प विष कुभ है । १३०
अप्रतिक्रमण अमृत कुभ है । १३०
विकल्प मात्र बधन का कारण १३०
इस सबध मे भ्राति का निराकरण १३१

सर्व विशुद्ध ज्ञान अधिकार

द्रव्य अपने गुण पर्यायो का ही कर्ता है १३२
जीव अन्य का कार्य या करण नही १३३
कर्त्ता-कर्म की सिद्धि परस्पराश्रित है १३३
आत्मा की दुर्दशा का कारण १३३
कर्मबध का मूल कारण १३४
बध का अभाव कब होता है ? १३४
अज्ञानी एव ज्ञानी के भावो मे अतर १३४
अभव्य शास्त्र पाठी होकर भीमिथ्या दृष्टि ही बना रहता है । १३५
ज्ञानी की कला निराली है । १३५
ज्ञान चेतना का परिणाम १३५
ज्ञानी की परणति १३६
कर्मों को आत्म परिणाम का कर्त्ता-मानने मे दोष १३६
पर कर्त्तृत्व मानने में सैद्धातिक हानि १३६
पर कर्त्तृत्व भाव रखने वाला मुक्ति का अपात्र १३७

बुद्धि भ्रम क्यों होता है ? १३७
पर में कर्त्ता-कर्म की मान्यता उपचार है । १३८
पुद्‌ग कर्म जीव को विकारी नही बनाता । १३८
जीव भी पुद्‌गल मे विकार उत्पन्न नही करता १३९
पुद्‌गल कर्म की परणति पुद्‌गल कृत ही है । १३९
जीव की विकार परणति जीव की ही है । १४०
पर कर्त्तृव्य का पूर्व पक्ष १४०
पय कर्त्तृव्य सिद्धात स्वीकार करने मे दोष १४१
कुछ अन्य भ्रमो का निराकरण १४२
जीव मे कूटस्थ नित्यता समव नही १४३
आत्मा कथचित् नित्यानित्य है १४४
वस्तु अनेकान्तात्मक है १४४
अनित्यैकात मे दोषोद्‌भावन १४४
वस्तु मे अनेतात्मकता स्वत. सिद्ध है १४५
निमित्त दृष्टि से जीव कर्म को करता हुआ भी तन्मय नही होता १४६
दृष्टात पुरस्सर उक्त कथन का समर्थन १४६
निश्चय नय से आत्मा स्वय रागी या सुखी दुखी बनता है एव स्व का ही ज्ञाता दृष्टा है । १४७
उल्लिखित कथन का दृष्टात द्वारा समर्थन १४८
व्यवहार नय से आत्मा अन्य द्रव्यो का ज्ञाता दृष्टा है । १४९
अन्य व्यवहार वक्तव्य का स्पष्टीकरण
निश्चय से पर के अकर्तृत्व का समर्थन १५०
राग द्वेष परिणाम निश्चय से जीव के है १५१
विषयो मे राग द्वेष जीव के अज्ञान से होता है । १५१
प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान का स्वरूप १५३
आलोचना और चारित्र का स्वरूप १५४
दुखबीज कर्म बध और उसका कारण १५४
वस्तुत आलोचन, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान क्या है ? १५५
ज्ञान, कर्म और कर्मफल चेतना १५५
चेतनात्रय का शुद्ध और अशुद्ध चेतना में विभाजन १५५
शास्त्रो से ज्ञान की भिन्नता १५६
ज्ञान की शब्दो से भिन्नता १५३
ज्ञान की पुद्‌गलादि द्रव्यो से भिन्नता १५७
ज्ञान की अध्यवसानो से भिन्नता १५७
जीव निश्चय से आहारक नही
निश्चय से जीव पर का त्यागग्रहण नही करता । १५८
व्यवहार मे पर वस्तु का त्याग-ग्रहण स्वीकृत है । १५८
निश्चय से शारीरिक लिग (वेश) मुक्ति मार्गनही । १५९
वस्तुत रत्नत्रय ही मुक्ति मार्ग है १६०
आत्म सबोधन १६०
व्यवहार नय मुक्ति मार्ग मे द्रव्य-लिग स्वीकार करता है । १६१
क्रिया निरपेक्ष ज्ञान नय एव ज्ञान निरपेक्ष क्रिया नय से मुक्ति नही मिल सकती १६३
मुक्ति को कौन प्राप्त करता है ? १६३
अत मगल १६३
प्रशस्ति १६४